ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

वैश्वीकरण एवं विश्वशान्ति में वैदिक दर्शन की प्रासंगिकता : एक अध्ययन

The Relevance of Vedic Philosophy in Globalization and World Peace: A Study

Paper Submission: 10/12/2020, Date of Acceptance: 24/12/2020, Date of Publication: 25/12/2020

मूल चन्द
सह आचार्य,
संस्कृत विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

सारांश

वैश्वीकरण के दौर में सम्पूर्ण विश्व वर्तमान में सीमाविवाद, नक्सल भेद, जातिवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, धर्म, कोरोना महामारी इत्यादि कई समस्याओं से जूझ रहा है। विश्व में कई देश प्रायः बिना मेहनत के धनार्जन करना चाहते हैं। भिन्न–भिन्न देशों के धनार्जन के तरीके भी पृथक्–पृथक् हो सकते हैं। दुनिया में दो तरह के व्यक्ति होते हैं नियतिवादी तथा पुरुषार्थवादी। नियतिवादी ईश्वर पर विश्वास रखकर जो मिलता है उससे सन्तुष्ट हो जाते हैं, पुरुषार्थवादी मेहनत करके धनार्जन करते हैं। तीसरी प्रकृति के वे व्यक्ति होते हैं जो दोनों से ही भिन्न पाये जाते हैं। वे डराकर, धमकाकर, दबाकर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं तथा धनार्जन करना चाहते हैं।

वर्तमान में विश्व के विभिन्न देश, राज्य संस्थाएं, राजनीतिक पार्टियां, परिवार, व्यक्ति आपस में लड़ते–झगड़ते, प्रतिदिन सुर्खियों में रहते हैं। इन सभी के विवाद के कारण या तो धनार्जन, सीमा विवाद, अस्तित्व इत्यादि ही प्रायः देखे जाते हैं।

वेद कभी भी सीमित परिवार की बात नहीं करते बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी को परिवार मानने वाले ग्रन्थ वेद ही हैं। उस विकट परिस्थिति में वैदिक दर्शन की महता और भी बढ़ जाती है क्योंकि वेद हमेशा विश्वशान्ति की बात करता है। अतः सम्पूर्ण मानव समूदाय से निवेदन तथा अपील है कि वैश्वीकरण के दौर में विश्वशान्ति बनाये रखने हेतु वैदिक दर्शन को अपनाए तथा सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत करें।

In the era of globalization, the whole world is currently facing many problems like borderism, naxal discrimination, casteism, terrorism, separatism, religion, corona epidemic etc. Many countries in the world often want to earn without hard work. The methods of earning from different countries can also be different. There are two types of people in the world, determinists and effortless. The destinyists are satisfied with what they get by believing in God, they earn effort by making effort. There are those persons of the third nature who are found to be different from both. They want to establish their dominance by intimidating, intimidating, pressing and earning.

At present, various countries, state institutions, political parties, families, individuals fight among each other in the world, they are in the headlines every day. Due to all these disputes, either earning, border disputes, existence etc. are often seen.

The Vedas never talk of a limited family, but the Vedas, who consider the whole earth as family. In that difficult situation, the importance of Vedic philosophy increases even more because the Vedas always talk of world peace. Therefore, there is a request and appeal to the whole human community to adopt the Vedic philosophy and maintain a happy and prosperous life in order to maintain world peace in the era of globalization.

मुख्य शब्द : मनु, मानव, सृष्ट, आकाश, पुरुषार्थ, विधाता, ऋग्वेद, यजुर्वेद, ईश्वर, कर्मयोग, कोरोना महामारी, भारत, अमेरिका इत्यादि।
Manu, Manav, Srishta, Akash, Purushartha, Vidhata, Rigveda, Yajurveda, Ishwara, Karmayoga, Corona Pandemic, India, America etc.

प्रस्तावना

पृथ्वी पर जबसे मानव सृष्टि हुई है तब से वह समस्याओं से ग्रसित रहा है। मनुष्य जब काल के गाल में समा जाता है तब तक उसे समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलती। मनु के काल में स्वयं मनु सहित मनुष्य समुदाय समस्याओं से ग्रसित था तथा आज इस वैश्वीकरण के दौर में आज भी कोई न कोई समस्याएं सामने दिखती ही रहती है। एक समय था जब मनुष्य के पास खाने हेतु अनाज नहीं था, शरीर को ढकने हेतु कपड़े नहीं थे, रहने हेतु चार दीवारों से युक्त छतमय मकान नहीं था। वर्तमान में मनुष्य चांद पर कई बार पहुंच चुका है, अन्तरिक्ष की यात्रा कर चुका है और भी बहुत शोध जारी हैं। सम्पूर्ण विश्व के किसी भी स्थान पर रहते हुए किसी भी देश में बात कर सकते हैं वीडियो कॉल, टीवी, इण्टरनेट इत्यादि संसाधनों से एक–दूसरे को देख सकते हैं।

विश्व के सम्पन्न राष्ट्रों ने बहुत उन्नति की है कि वे आकाश में उड़ सकते हैं, समुद्र में दौड़ सकते हैं। विशेष बात यह है कि अमेरिका जैसा देश
ऐसी जहाज रखता है जो समुद्र में चलता भी है तथा युद्ध के समय उसी पर हवाई अड्डा भी बन जाता है। लड़ाकू विमान वहां से उड़ान भर सकते हैं। कई देश परमाणु शक्ति सम्पन्न भी हैं। दुनियां में विश्व युद्ध नहीं तो चीन जैसे देश ने जैविक युद्ध का हमला कर दिया। आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना से भयभीत बना हुआ है।

विश्व के कई देश सीमा विवाद में उलझे हुए हैं। भारत के पड़ौसी देश प्रायः सीमाविवाद के कारण लड़ते रहते हैं। कई देशों के बीच अस्तित्व की लड़ाई है। ऐसी परिस्थिति में यदि विश्वशान्ति की अपील न की जाती है तो सम्पूर्ण विश्व गर्त में जाता हुआ दिखाई दे रहा है। इस प्रकार इन सभी विषयों पर चिन्तन होता रहा है तथा वर्तमान में भी चिन्तन जारी है।

प्राचीनकाल से ही जीवन जिने के दो दृष्टिकोण रहे हैं, प्रथम नियतिवादी तथा द्वितीय पुरुषार्थवादी। नियतिवादी मानते हैं कि जीवन में जो भी घटनाएं पहले से नियत हैं तथा हम लोग उसके अनुसार चलने के लिए विवश हैं, परिणामस्वरूप वह शान्त होकर आने वाले कल की प्रतीक्षा करता रहता है। उसके उन्नयन के लिए प्रयत्नशील नहीं रहता। इस प्रकार इस पक्ष का अनुसरण करने वाले देश, समाज, व्यक्ति, निर्धन, दीन–दुःखी बने रहते हैं। क्योंकि भाग्यवादी होने के कारण यही उनकी नियति है। जो व्यक्ति भविष्य को नियति पर छोड़कर परिश्रम की आवश्यकता नहीं समझता तथा कहता है कि जो होना होगा वही होगा। इस प्रकार ऐसे लोग भविष्य को ईश्वर पर छोड़कर उनके पास जितना धन तथा जो भी वर्तमान में है उसी के आनन्द से जीवन व्यतीत करते हैं। इनके सन्दर्भ में भर्तृहरि ने कहा है यथा –

यद् धात्रानिजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनं,
तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरांमेरौ च नातोऽधिकम्।।
तद् धीरो भव वित्तवत्सु कृपणं वृत्तिं वृथा सा कृथाः,
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृहणाति तुल्यं जलम्।।[1]

अर्थात् विधाता ने थोड़ा अथवा बहुत जो धन अपने ललाट फलक पर लिख दिया है उसे मनुष्य मरूस्थल में भी अवश्य प्राप्त कर लेता है पर सुमेर पर्वत पर भी इससे अधिक नहीं मिलता इसलिए धैर्यवान और सन्तोषी बनो धनवानों के विषय में व्यर्थ में अपनी वृति को दीन मत बनाओं अर्थात् घड़े में जितना जल समा सकता है उतना ही उसे मिलेगा चाहे वह थोड़े जल वाले कुए से ग्रहण करे या जल राशी वाले समुद्र से ग्रहण करे। इस प्रकार ये नियतिवादियों के सन्दर्भ में उनके लिए सहारा हो सकता है।

दूसरा पक्ष पुरुषार्थवादियों का है। इनके लिए भविष्य अनिश्चित और परिवर्तनीय है। इस पक्ष को मानने वालों के लिए कहा गया है कि यदि वे प्रयास करें तो उनका भविष्य वैसा ही हो सकता है जैसा वो बनाना चाहे। इस सन्दर्भ में वेद में कहा है यथा –

यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थै
रर्कैभिः सूनो सहसो ददाशत्।
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया
द्युम्नेन श्रवसा वि भाति।।[2]

अर्थात् जो प्रशंसित कर्म और गुणों से सहित जन इस संसार में प्रयत्न करते हैं, वे विद्या, यश और धन से युक्त होकर संसार में प्रसिद्ध होते हैं।

अनक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा।
देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः।।[3]

अर्थात् मनुष्यों को चाहिए कि वे आलस्य को सर्वथा छोड़कर पुरुषार्थों में ही निरन्तर रहकर मूर्खपन को छोड़कर वेद–विद्या से शुद्ध की हुई वाणी के साथ सदा व्यवहार करें और परस्पर प्रीति करके एक–दूसरे की सहायता करे। जो इस प्रकार के मनुष्य होते हैं वे ही अच्छे–अच्छे सुखयुक्त आनन्दित होते हैं। अर्थात् आलसी पुरुष कभी आनन्द को प्राप्त नहीं होते।

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में अस्थिरता बनी हुई है। कभी अमेरिका कभी ईराक के साथ मतभेद कभी उत्तरी कोरिया, कभी रूस, कभी चीन के साथ मतभेद चलता रहता है। इसी प्रकार भारत का पाकिस्तान, चीन, बंग्लादेश इत्यादि देशों के साथ मतभेद चल रहा है। नेपाल जैसा देश प्रायः भारत की सहायता से ही अपनी पहचान बनाने हेतु विश्व मानचित्र पर दिखने लगा तो उसने भी अपने नक्से को बदलकर भारत के कुछ हिस्से को अपने नक्से में दिखाकर नेपाली संसद में पास भी कर दिया। ऐसी स्थिति में विश्वयुद्ध के संकेत दिखने लग गए हैं। यदि आपसी जंग छिड़ी तो सम्पूर्ण विश्व का ही नुकसान तय है। ऐसी स्थिति में विश्वशान्ति हेतु वैदिक दर्शन ही बहुपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मनुष्यों को सौ वर्ष जीवित रहने की इच्छा रखनी चाहिए। प्राचीन काल में मानव की औसत आयु 100 वर्ष मानी गई है। अनेक स्थलों पर ऋषियों द्वारा सौ वर्ष तक जीने की कामना वैदिक साहित्य में की गई है यथा –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।[4]

अर्थात् इस संसार में शास्त्रनियत कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार से त्यागभाव से किये जाने वाले कर्म तुझ मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है, जिससे कि मानव कर्म को बन्धनों से मुक्त हो सके।

हम सुपथ पर चले –

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुन्रर्ददताघ्नता जानता सं गमे–हि।।[5]

अर्थात् हे मनुष्यों जैसे सूर्य और चन्द्रमा नियम से दिन–रात चलते रहते हैं वैसे न्याय के मार्ग प्राप्त करना चाहिए तथा सज्जनों के साथ समागम करना चाहिए।

नियतिवादी और पुरुषार्थवादी दोनों धारणाओं में से कोई भी सिद्धान्त पूर्ण नहीं है। हम देख ही रहे हैं कि पश्चिमी लोग जो पुरुषार्थवादी हैं वे समृद्ध होकर भी अशान्त हैं। बहुत कुछ प्राप्त करके भी वे अभी भूखे हैं। प्राचीन सभ्यत नियतिवाद के सिद्धान्त पर चल रही है, जिसने समृद्धि के दर्शन नहीं किए व आपतियों के कारण त्रस्त हैं। मनुष्य को चाहिए कि शांति के मार्ग पर चलते हुए ही निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढ़ते व चलते जाना चाहिए।

मनुष्य को आवश्यकता से अधिक धन संचय करने हेतु मना किया गया है। फिर भी मनुष्य धनार्जन हेतु प्रयासरत रहता है। मनुष्य को आवश्यकतानुसार ही धन का संचय करना चाहिए, जिससे उसका कल्याण हो सके। यथा –

या मा लक्षमीः पतयालूरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्रास्मत्सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तोवसु नो रराणः।।[6]

अर्थात् संतोषी व संयमी पुरुष की ईश्वर से प्रार्थना है कि हे प्रभो प्रेम और सेवा के काम में न आने वाली व मेरा पतन करने वाली यह लक्ष्मी मुझे इस प्रकार चिपक गई है जैसे आकाश बेल (अम्बर बेल) वृक्ष पर छा जाती है वह बेल वृक्ष को कोई लाभ नहीं पहुंचाती, अपितु वृक्ष का रस ही चूसती रहती है और अन्त में उसे सुखा देती है।

इसी प्रकार व्यक्ति, सेवा के काम न आने वाला धन पुरुष को कोई लाभ नहीं पहुंचाता अपितु व्यर्थ की चिन्ताभार बढ़ाकर उसकी मृत्यु का कारण ही बनता है।

कल्याण के मार्ग पर चलें –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।[7]

अर्थात् मन्त्र में कहा है कि कण–कण में ईश्वर का वास है और जिसका जिसमें वास होता है वही उसका स्वामी होता है। इसलिए इस जगत् का स्वामी परमात्मा (ईश्वर) है। यह समस्त संसार उस ईश्वर का है। अतः मनुष्य को त्यागभाव से भोग करना चाहिए। कभी किसी के धन की ओर ललचाई दृष्टि नहीं डालनी चाहिए।

वर्तमान में चीन, पाक, नेपाल इत्यादि देश भारत का क्षेत्रफल (भूमि) हड़पना चाहते हैं, कई देश कोरोना महामारी के दौरान धन कमाना चाहते हैं। लगभग देश कोरोना वेक्सीन बनाने में लगे हुए हैं। पिछले दिनों भारत ने चीन के लगभग 59 एप्स बन्द करने की घोषणा की। इस समाचार को सुनकर चीन बोखला गया। ऐसे देशों को सन्देश देने हेतु उपर्युक्त मंत्र की अन्तिम पंक्ति में कहा कि वेद हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। वेद कहता है कि वस्तु का त्यागभाव से भोग और किसी अन्य के धन की इच्छा न करना ये दो सिद्धान्त मानव के जीवन में सुख और शान्ति स्थापित कर सकते हैं। आज के जीवन में विसंगति यही है कि हम आवश्यकता से अधिक संचय करते हैं तथा दूसरे का धन किस प्रकार हमारा हो जाए इसके लिए दिन–रात प्रयत्नशील रहते हैं।

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः।।[8]

अर्थात् न अधिक कामना प्रशंसनीय हो न उनका सर्वथा परित्याग हो। वेद के अध्ययन की कामना से ही ये सब हो पाता है और धार्मिक अनुष्ठान भी बिना कामना के नहीं हो सकते। इस प्रकार वेद की दृष्टि में संयम नियन्त्रित कामना मनुष्य के लिए अपेक्षित है।

कर्मयोग का सिद्धान्त –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भुमा ते संगतोऽस्त्व कर्मणि।।[9]

अर्थात् हे अर्जुन तेरा केवल कर्म करने में ही अधिकार है फल में नहीं। तेरे मन में कभी कर्मफल की इच्छा भी न हो और तू कभी कर्म से विरत होने वाला भी न हो। उपर्युक्त कर्म सिद्धान्त के मूल में भावना यह है कि कोई भी व्यक्ति यही चाहता है कि प्रत्येक कर्म का फल मुझे ही प्राप्त हो परन्तु पद्य का भाव यह है कि फल पर तेरा अकेले का अधिकार नहीं है जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह भावना स्थापित हो जायेगी कि फल पर सभी को थोड़ा–थोड़ा अधिकार है तब अशान्ति की सम्भावना बहुत कम हो जाती है।

सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से ग्रसित है। सभी देश अपना–अपना फर्ज निभा रहे है। भारत जैसे देश में निर्मित मलेरिया की दवा अमेरिका जैसे देश भारत से कभी आयात करेगा ऐसा सोचा भी नहीं था, परन्तु उसे मंगवानी पड़ी। ये उदाहरणा मात्र है, प्रत्येक देश एक दूसरे की यथा सम्भव मदद करते रहते हैं और यदि वर्तमान जैसी कोई महामारी फैलती है तो विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक इत्यादि भी देशों की आर्थिक व अन्य आवश्यकतानुसार मदद ये संस्थाएं करती हैं। इस प्रकार देश, समाज, व्यक्ति को इस सिद्धान्त को स्वीकार करे तो बहुत सी परेशानियां अपने आप ही कम हो जायेंगी।

अधर्मी को धन नहीं मिलता –

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते
वसु न स्त्रेधन्तं रयिर्नशत्।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं
मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि।।[10]

अर्थात् पद्य का भाव है कि जो अधर्माचरण से युक्त दुष्ट हिंसक मनुष्य है उनको धन, राज्य, श्री और उत्तम सामर्थ्य प्राप्त नहीं होता, इससे सबको न्याय के आचरण से ही धन खोजना चाहिए।

प्राचीन काल में भी धनार्जन के प्रति दृष्टिकोण बहुत उचित अनुचित के विवेक से परिपूर्ण नहीं था। भर्तृहरि के युग में धन के प्रति वही दृष्टि देखने को मिलती है जो वर्तमान में है। यथा –

जातिर्यातु रसातले गुणगणस्तस्याप्यधो गच्छतं
शीलं शैलतटात् पतत्वभिजनः संदह्यतां वह्निना।।
शौर्य वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं।
येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे।।[11]

अर्थात् ब्राह्मणादि जाति रसातल में चली जाय, धैर्य शौर्य आदि गुण समूह चाहे रसातल से भी नीचे चला जाए, चाहे पर्वत–प्रदेश से गिर पड़े अर्थात् गिरकर विशीर्ण

हो जाये, चाहे अपना वंश अग्नि में जल जाये, शत्रु शौर्य पर शीघ्र ही वज्र गिरे अर्थात् आत्म शौर्य भले ही नष्ट हो जाय हमें तो केवल धन प्राप्त हो जिसके बिना ये सभी गुण तुच्छ तृण के समान हो जाते हैं।

वर्ममान में मनुष्य धन के लिए किसी भी सीमा तक गिर सकता है यह प्रवृति मनुष्य मनुष्य की हमेशा रही है। तथा अशान्ति के मूल में भी यहीं हैं। पुरुषार्थ चतुष्ट्य में भी अर्थ पर अधिक बल दिया गया है। आज अर्थाश्रित धर्म है। धर्माश्रित व्यवस्था को भूल चुके हैं। यदि धर्माश्रित अर्थ होगा तो अशान्ति के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा।

ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कहा गया है कि परिश्रम से अर्जित धन से सुख–शान्ति की प्राप्ति होती है। यथा –

नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति रोहित शुश्रुम।
इन्द्र इच्चरतः सखा। चरैवेति चरैवेति।।[12]
पापो नृषद्वरों जन, इन्द्र इच्चरतः सखा, चरैवेति।।

अर्थात् जो पुरी शक्ति से परिश्रम नहीं करे उन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती। आलसी मनुष्य पापी होता है। ईश्वर श्रम करने वालों का मित्र हो जाता है इसलिए कहा चलते रहो चलते रहो।

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वतिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भगः।।[13]

अर्थात् बैठने वाले का भाग्य बैठ जाता है और जो खड़ा हो जाता है उसका भाग्य खड़ा हो जाता है और जो सो जाते हैं उनका भाग्य सो जाता है और जो चलने लगते हैं उनका भाग्य भी चलने लगता है। इसलिए सदा परिश्रम करो इस तरह वैदिक साहित्य में श्रम से अर्जित धन प्राप्ति हेतु कामना की गयी है। जहां बिना श्रम के धन का आगम होता है वहां नाना प्रकार के रोग विभिन्न प्रकार की विपतियां आती रहती हैं। इसलिए श्रम की महता प्रतिष्ठित की गई है।

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रिा रामो मोघं पार्थ स जीवति।।[14]

अर्थात् यज्ञ चक्र को जो नहीं घूमाता जो भोग के साथ त्याग नहीं करता व पापी और विषमी है और हे अर्जुन! उसका जीवन व्यर्थ है। इसी सन्दर्भ में वेद में कहा है–

स इदभोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहुता उतापरीषु कृणुते सखायम्।।[15]

अर्थात् उसी का खाना खाना है जो घर आये भूखे को अन्न देकर स्वयं खाता है। ऐसे देने वाले के पास अन्न कभी कम नहीं होता और वह विरोधियों का भी मित्र बन जाता है।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुता शितमुप गच्छन्ति मृत्यवः
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन् मर्डितारंन विन्दते।।[16]

अर्थात् ईश्वर ने मृत्यु का कारण केवल भूख को नहीं बनाया है, जो भोजन करते हैं वो भी करते हैं देने वाले का धन नष्ट नहीं होता, अपितु वह एक प्रकार से उसकी भविष्यनिधि में जमा होता है यदि रखो बिना त्याग किये तुम अपने हितेषी नहीं बन सकते।

धन से अशान्ति और दुःख के निवारण का प्रतिपादन करता हुआ वे कहता है–

एन्द्र सानासिं रयिं सजित्वानं सदासहम्।
वर्षिष्ठमूतये भर।।[17]

अर्थात् ऐश्वर्य का भण्डार परमात्मा हमें जीवन की रक्षा के लिए ऐसा धन प्रदान करें जिसका हम बांटकर उपयोग करें। जो विजेता बनाने वाला हो, स्वावलम्बी बनाने वाला हो तथा बहुत वर्षों तक टिकने वाला हो। जब हम धन का बांटकर उपयोग करते हैं तो अशान्ति का कोई कारण ही नहीं रहता। समस्त प्रकार की समस्याओं का मूल मनुष्य का व्यक्तिवादी होना ही है। अतः इस सन्दर्भ में वेद कहता है–

केवलाधो भवति केवलादी[18]

अर्थात् अकेला भोजन करने वाला केवल पाप खाता है यथा कहा भी है–

यज्ञशिष्टाशनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्यात्मकारणात्।।[19]

अर्थात् दूसरों को भोजन खिलाकर खाने वाला सब पापों से छूट जाते हैं। जिनके घर में भोजन केवल खाने के लिए ही बनता है वो अन्न नहीं पाप खाते हैं।

इस प्रकार वैश्वीकरण के दौर में परम्परा चाहे नियतिवाद की हो या पुरुषार्थवादी की हो दोनों सिद्धान्तों में कुछ तरीका यदि बदल जाये तो जीवन जीने का आनन्द ही आ जाये। मानव को चाहिए कि वह दूसरों का अस्तित्व भी स्वीकार करे। धनार्जन करे तो मेहनत से करो। यदि हम आज सुखी होना चाहते हैं तो उसे वेद के सन्देश को स्वीकार करना होगा।

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूदा
दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिताः।
लोको निधनम्।।[20]

अर्थात् हम सभी कठिन परिश्रम से उपार्जित भाग को ग्रण करने वाले सभी के लिए हितकारी, सत्य पर आरूढ़, अच्छे–अच्छे व्रत धारण करने के संकल्प करने वाले तथा यज्ञ से प्रतिष्ठा को प्राप्त करें। इस प्रकार का आचरण करते हुए हम मृत्यु पर्यन्त वैश्वीकरण के दौर में यही वैदिक दर्शन शान्ति का मार्ग है।

अध्ययन का उद्देश्य

समाज वैदिक दर्शन से अनभिज्ञ तो नहीं है परन्तु दर्शन में नीहित मंत्रों का पालन नहीं करने के कारण प्रत्येक मानव किसी न किसी प्रकार की समस्या से पीड़ित महशूस हो रहा है।

वैश्वीकरण के दौर में सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है तथा अन्य देश भी आपस में सीमा–विवाद, नस्लभेद या अस्तित्व इत्यादि विषय को लेकर पीड़ित दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति शान्ति की खोज में लगा हुआ है। वर्तमान में वैदिक दर्शन ही एकमात्र उपाय है, जिससे वैदिक मंत्रों में नीहित सन्देशों को अपनाते हुए ही विश्व शान्ति प्राप्त की जा सकती है, यही इस पत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के दौर में सभी देश प्रायः एक–दूसरे के विचारों से सहमत नहीं तथा होना भी नहीं चाहिए परन्तु शत्रु की भूमिका निभाना एक चिन्तनीय विषय है। मानव मानव का शत्रु बनता हुआ दिखाई दे रहा है। रिस्ते सारे बदनाम होते नजर आ रहे हैं। वैदिक दर्शन कभी–भी इस तरह की स्वीकृति नहीं देता।

वेद कहता है हे पृथिविं। तुम्हारे ऊपर विद्यमान तुम्हारे पृष्ठ स्थानीय इस पंच भौतिक संसार में निवास करता हुआ दिग्भ्रमणार्थ जब मैं निकलूं तो तुम्हारी सारी दिशाए, उपदिशाएं एवं उन दिशाओं में रहने वाले प्राणी मेरे लिए तुम्हारी कृपा से अनुकूल एवं सुखद बने रहें।

यास्ते प्राची प्रदिशो या उदीचीर्यस्ते
भूमे अधराद् याश्च पश्चात्।
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु
मा निपस्तं भुवने शिश्रियाणः।।[21]

कथा साहित्य में भी बहुत भी अति सुन्दर वर्णन आता है।

अयं भिजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[22]

अर्थात् हल्के चित वालों की सोच है कि यह अपना है अथवा पराया है। परन्तु उदार चित वालों के लिए सम्पूर्ण भूमण्डल ही अपना परिवार होता है। अतः ऐसी परिस्थिति में वैदिक दर्शन की सार्थकता और भी बढ़ जाती है। वर्तमान में यदि वैदिक दर्शन को अपनाया जाए जो सम्पूर्ण विश्व सुखी व समृद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *नीतिशतकम् पद्य नं. 41 महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा*
2. *ऋग्वेद 6.5.5*
3. *यजुर्वेद 3/47*
4. *यजुर्वेद 40.2*
5. *ऋग्वेद 5.51.15*
6. *अथर्ववेद 07.115.02*
7. *यजुर्वेद 40.1*
8. *मनुस्मृति 2.2*
9. *भगवद्गीता 2.47*
10. *ऋग्वेद 7.32.21*
11. *नीतिशतकम् पद्य नं. 32 महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा*
12. *ऐतरेय ब्राह्मण 7.33.3, पृष्ठ संख्या 1150, वाराणसी*
13. *ऐतरेय ब्राह्मण 7.33.3, पृष्ठ संख्या 1152*
14. *भगवद्गीता 3.16*
15. *ऋग्वेद 10.117.13*
16. *ऋग्वेद 10.117.1*
17. *ऋग्वेद 1.8.1*
18. *ऋग्वेद 10.117.6*
19. *भगवद्गीता 3.13*
20. *अथर्ववेद 12.5.3*
21. *अथर्ववेद 12.21*
22. *हितोपदेश मित्रलाभ पद्य सं. 117, अभिषेक प्रकाशन, जयपुर*